जतिम्हणभा न भामं। वनस्पतिना द्धदिन्द्याणि। वस्वने वस्धेयस्य वियन्तु यज। देवं बर्हिवारितीनां। अध्वरे स्तीर्णमिश्वभ्यां। जर्णम्खदाः सरस्वत्याः॥ ५॥

स्थानिमन्द्र ते सदः। ईशाय मन्युः राजानं बिहिषा
दध्रिन्द्र्यं। वसुवने वसुध्यस्य वियन्तु यजं। देवोश्रिप्तः स्विष्टक्रत्। देवान् यश्चय्यययं। होताराविन्द्रमिश्वना। वाचा वाचः सरस्वतीं। श्रिप्तः सोमः
स्विष्टक्रत्। स्विष्टद्रन्द्रः सुनामा सविता वर्षो। भिपक्। दृष्टो देवो वनस्पतिः॥ स्विष्टा देवाश्राज्यपाः।
दृष्टा श्रिप्रिया। होता होने स्विष्टक्रत्। यशा न
द्धिदिन्द्र्यं। जर्जमपिनितः स्वधा। वसुवने वसुधेयस्य वियन्तु यजं॥ ६॥

दारी दध्रिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य वियन्तु यज्ञ जोष्ट्रीभ्यां दध्रिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य वियन्तु यज्ञ होत्रेभ्यां दध्रिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य वियन्तु यजे-न्द्र्याणि वसुवने वसुधेयस्य वियन्तु यज्ञ सरस्तत्या वनस्यतिः षट् च ॥ अनु० १४ ॥

देवं बहिंदेवी द्वी द्वी उषासाविश्वना देवो जोष्ट्री देवी फर्जा हेवी-